श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | नवम्बर - 2014 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

नेपाल के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. रामबरन यादव जी को ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय। साथ है नेपाल सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्र.कु. राज दीदी तथा अन्य।

नेपाल के उपराष्ट्रपति श्री परमानंद झा जी के साथ ईश्वरीय ज्ञान-चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में है संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. राम सिंग, न्यायाधीश ब्र.कु. वी. ईश्वरैया, ब्र.कु. तिलक तथा अन्य।

परामर्श दाता

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर जी
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन जी
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग

प्रधान सम्पादक

राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

सम्पादक मण्डल

ब्र.कु. सुन्दरलाल जी, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
डॉ. ब्र.कु. ममता शर्मा, मेहसाना

प्रकाशक

एज्युकेशन विंग (R.E. & R.F.)
एवं ब्रह्माकुमारीज़

प्रकाशन

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड

डिजाइनिंग और टाइप सेटिंग

ब्र.कु. चुनेश
वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- सम्पादकीय - महापरिवर्तन के लिए शिक्षा
- आत्मिक संवाद ही मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा की कसौटी है
- अरबपति बनने का सुनहरा अवसर
- सत्कर्मों से जीवन में श्रेष्ठ फल की प्राप्ति
- कविता - सत्कर्मों से सुखमय संसार...
- दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य
- विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां
- 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का भव्य वैश्विक शुभारम्भ
- मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में प्रवेश प्रारम्भ, 2014-15

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन सेंटर, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: shikshadarpanhq@gmail.com
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

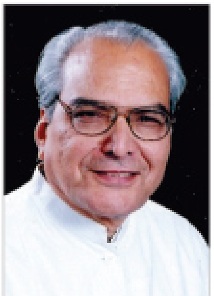

सम्पादकीय

महापरिवर्तन के लिए शिक्षा

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। प्रत्येक सभ्यता एवं संस्कृति में समय-समय पर आवश्यक परिवर्तन हुए हैं। जैसे-जैसे समय की माँग होती है, उसी अनुसार मानव सभ्यता ने करवट बदली है। आवश्यकता के अनुसार आविष्कार हुए हैं। आदि से अंत तक परिवर्तन के लिए शिक्षा की अहम भूमिका रही है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो मानव जीवन को एक दिशा प्रदान करता है। इसी माध्यम से ही परिवर्तन का प्रारम्भ होता है।

जब भी कोई परिवर्तन लाना होता है तो सर्वप्रथम उसके लिए शिक्षा दी जाती है। महान व्यक्ति पहले ज्ञान के माध्यम से शिक्षित होते हैं। फिर शिक्षा की गहराई में जाकर दीक्षित होते हैं। यही शिक्षा-दीक्षा की समर्पण भावना से जीवन का लक्ष्य प्राप्त करते हैं। यह हो गई एक साधारण सी बात परन्तु जब परिवर्तन का समय होता है, तब जगत में कुछ ऐसी असाधारण बातें या घटनाएं घटित होती हैं जिससे पूरी सभ्यता और संस्कृति प्रभावित होती है। ऐसे प्रभाव परिवर्तन के लिए आवश्यक होते हैं। जीवन की छोटी-छोटी बातों से हम कुछ सीखते हैं। ऐसे ही छोटी-छोटी बातें हमारे अंदर असाधारण समझ पैदा करती है। सीखना मनुष्य के स्वभाव में है। इसीलिए सीखने के लिए शिक्षा दी जाती है। शिक्षा हमेशा अच्छे कार्य करने के लिए होती है। अच्छा वह होता है जिसका मूल्य होता है। मूल्य तब बनता है जब हमें जीवन में उसकी अनिवार्यता महसूस होती है।

मूल्य, युग परिवर्तन लाते हैं। हम मानते हैं कि प्रत्येक युग में मूल्य प्रभावी है। सृष्टि के आरम्भ से अंत तक मूल्य प्रभावी है। इसीलिए प्रत्येक युग की शिक्षा में मूल्य शिक्षा दी जाती है। सतयुग में देवी-देवताओं को 16 कला सम्पन्न होने के बाद भी शिक्षा दी जाती थी। क्योंकि यह एक पवित्र कार्य माना जाता था। भविष्य में आने वाले समय के लिए भी शिक्षा प्राप्त करना जरूरी है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग के अंतिम समय तथा सतयुग और कलियुग के बीच का समय संगमयुग - सभी युगों में शिक्षा दी जाती रही है।

समय का चक्र परिवर्तन का चक्र है। चारों ही युग में परिवर्तन हुए हैं। परन्तु मूल्यों की आवश्यकता प्रत्येक युग में महसूस होती रही है। सतयुग में जीवन व्यवहार के लिए 16 कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। इसीलिए आत्मा सम्पूर्णता की शिक्षा पाकर देवी-देवता के रूप में पहचानी जाती थी। त्रेतायुग में भी जीवन-व्यवहार की शिक्षा दी जाती थी। वहाँ राजा और प्रजा सभी शिक्षित व दीक्षित थे। परन्तु वहाँ मूल्यों में परिवर्तन आया। इसीलिए देवात्माएं क्षत्रिय वर्ण में परिवर्तित हुईं। यहाँ धीरे-धीरे शिक्षा का भी परिवर्तन हुआ।

द्वापरयुग से मनुष्य जीवन में काफी परिवर्तन आया। ज्ञान का स्थान भक्ति ने ले लिया जहाँ देवात्माएं, मनुष्यात्माओं के रूप में पहचानी जाने लगीं। कलियुग तक आते-आते परिवर्तन अंतिम छोर तक प्रभावी हुआ और मूल्यों में नकारात्मकता का प्रभाव बढ़ता गया। कलियुग के अंतिम छोर तक समाज, जीवन व सभ्यता मूल्यविहीन दृष्टिगोचर होने लगी। यहाँ मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। तब फिर से वही मूल्यों की आवश्यकता महसूस होने लगी। वर्तमान समय में सतयुगी दैवी राज्य की स्थापना के लिए, दैवी मूल्यों की पुर्नस्थापना और सृष्टि को प्रेम, पवित्रता, शांति के प्रकम्पन्नों से भरने के लिए महापरिवर्तन की आवश्यकता है। क्योंकि प्रत्येक युग के परिवर्तन में परमात्म-शक्ति का हस्तक्षेप अन्य महापुरुषों के माध्यम से किया गया। वहाँ निम्न से उच्चतम स्थान प्राप्त करने के लिए धर्मनेताओं व महान आत्माओं ने पूरे मानव समुदाय को दिव्य ज्ञान देने का प्रयास किया फिर भी यह संसार तमोप्रधानता की ओर ही अग्रसर होता गया। इस पतन को रोकने एवं नई दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना के लिए वर्तमान समय परमपिता परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन का आधार लेकर गीता-ज्ञान देकर महापरिवर्तन का कार्य कर रहे हैं।

संगमयुग महापरिवर्तन का समय है। कलियुग के अंत में सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए परमात्म-शक्ति का हस्तक्षेप जरूरी है। यह समय है फिर से मनुष्यात्माएं देवात्माओं के रूप में परिवर्तित हो, मूल्य और आध्यात्मिकता की शिक्षा प्राप्त करें। यह कार्य केवल परमात्म-शक्ति द्वारा ही सम्भव है। परमात्मा ने गीता में कहे हुए अपने वचनों 'संभवामि युगे-युगे...' को साकार करने के लिए, अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए अपने कदम बढ़ा दिए हैं। सभी मनुष्यात्माएं इस ज्ञान को समझ भी रही हैं परन्तु जीवन में परमात्म-शिक्षा को आत्मसात् करने और जीवन में धारण करने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से परमात्म-शक्ति और शिक्षा के द्वारा महापरिवर्तन सम्भव हुआ है। इस दिशा में परमात्म-शिक्षा के माध्यम से राजयोग की आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा अनेक मनुष्यात्माएं अपने जीवन को मूल्यों से अलंकृत कर रही हैं। यही परमात्म-प्रदत्त शिक्षा ही परिवर्तन लायेगी।

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

आत्मिक संवाद ही मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा की कसौटी है

ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, शान्तिवन

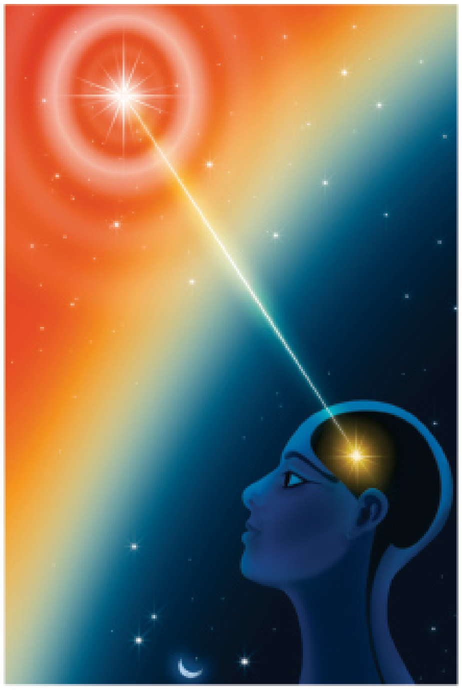

वर्तमान समय में जब हम शिक्षा की दशा एवं दिशा को देखते हैं तो पूरे शैक्षिक परिदृश्य की तस्वीर स्पष्ट दिखाई नहीं देती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमने शैक्षिक उपलब्धियों को प्राप्त नहीं किया है। हाल ही में हमारे वैज्ञानिकों ने अपने प्रथम प्रयास में मंगलयान को मंगल ग्रह की कक्षा में स्थापित करके अपनी विद्या अर्थात् भौतिक ज्ञान की श्रेष्ठता को प्रमाणित कर दिया है। इसी प्रकार जीवन के अन्य क्षेत्रों जैसे व्यापार, व्यवसाय और व्यावहारिक जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्णता की दिशा में हमने उल्लेखनीय प्रगति की है। परन्तु जब हम मानवीय संसाधन और सामाजिक संस्थानों में हो रहे मूल्यों के ह्रास को देखते हैं तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य के प्रति स्वाभाविक रूप से एक प्रश्नचिह्न खड़ा हो जाता है। क्या भौतिक वस्तुओं का उत्पादन और गुणवत्ता ही शिक्षा के उत्कर्ष का मानक है? क्या विदेशी पूंजी निवेश और स्थापित हो रहे नये-नये उद्योगों के आधार पर मान लिया जाये कि हम एक सभ्य एवं विकसित समाज की स्थापना की दिशा में अग्रसर हैं? क्या सूचना सम्प्रेषण के साधनों जैसे मोबाइल, इंटरनेट, कम्प्यूटर इत्यादि के तीव्र गति से बढ़ रहे प्रयोग से यह मान लिया जाये कि लोगों के बीच आपस में बेहतर संवाद स्थापित हो रहा है? क्या जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान के उत्पादन में हुई गुणात्मक वृद्धि को ही जीवन में गुणात्मक परिवर्तन मान लिया जाये? क्या हम शिक्षित होकर सभ्य कहलाने के अधिकारी बन गये हैं? क्या व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन से मानसिक संकीर्णता, हिंसा, घृणा, द्वेष, विद्वेष, स्वार्थ, घूसखोरी, भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार इत्यादि समाप्त हो गये हैं या कम हो रहे हैं? क्या वर्तमान शिक्षा प्राप्त कर हमने खुशी और प्रेम से रहना सीख लिया है? क्या हम संकीर्ण भावनाओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर स्वयं आत्मिक संवाद स्थापित करके जीवन को सकारात्मक दिशा देने में समर्थ बन गये हैं या बन रहे हैं?

यह निर्विवाद सत्य है कि संचार क्रान्ति के साधनों जैसे मोबाइल और इंटरनेट ने जीवन के फलक को बदला है। सूचना प्रौद्योगिकी ने प्रत्येक व्यक्ति को चलता-फिरता सूचना का टावर बना दिया है, वह किसी भी समय विश्व के किसी भी स्थान से सूचनाओं का आदान-प्रदान करने में समर्थ बन गया है। पत्रों के माध्यम से महीनों में पहुँचने वाली सूचनायें आज कुछेक मिनटों या चंद सेकेण्डों में गन्तव्य तक पहुँच जाती हैं। इंटरनेट ने आज विशेष रूप से युवाओं के जिंदगी में धमाकेदार ढंग से हस्तक्षेप किया है। इंटरनेट ने न केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को बदला है बल्कि अपनों से होने वाले संवाद को अस्वाद बना दिया है। आज 'फेसबुक' के माध्यम से मित्रता और बातचीत होती है परन्तु मित्र हमेशा 'फेसलेस' (अदृश्य) होता है। मित्रता मानवीय सम्बन्धों का सबसे पवित्र सम्बन्ध होता है जहाँ व्यक्ति आत्मिक संवाद स्थापित करके जीवन की समस्याओं को सुलझाता है। 'व्हाट्स-एप' और 'फेसबुकी' सम्बन्धों में सूचनाओं को आपस में सम्प्रेषित तो किया जाता है परन्तु खुले मन से संवाद तो आमने-सामने बैठकर ही करना बेहतर होता है। खुले मन से संवाद में भावनाओं का आदान-प्रदान होता है। प्रेम, शान्ति, खुशी और हृदय को स्पर्श करने वाले मनोभावों के प्रकम्पनों की अनुभूति आज मानवीय सम्बन्धों से निरन्तर गायब होती जा रही है। अपनों से होने वाली आपसी बातें सिमटती जा रही हैं। रिश्तों की बुनियाद दरकती जा रही है। क्या विकसित और सभ्य कहे जाने वाले समाज की यही दशा और दिशा है? क्या निरन्तर बढ़ती जा रही 'संवेदनहीनता' और 'संवादहीनता' वर्तमान मानवीय सम्बन्धों को सही दिशा में ले जाने में समर्थ है? क्या हमारा समाज मानवीय संसाधनों के विकास के दृष्टिकोण से उन्नति की ओर अग्रसर है? क्या शिक्षा का लक्ष्य यही है?

सभ्य मनुष्य ही एक विकसित समाज की सबसे सशक्त कड़ी होता है। परन्तु वर्तमान शिक्षा

व्यवस्था में मनुष्य को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने वाली मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा का मूल पाठ ही लुप्त है। मनुष्य के जीवन के विकास के कई आयाम होते हैं। भौतिक या आर्थिक विकास उनमें से मात्र एक है। यह सत्य नहीं है कि जीवन में हम केवल बेशुमार आर्थिक उन्नति करके सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। क्या दौलत इकट्ठी करके हम खुशियों के बिस्तर पर शान्ति से सो सकते हैं? यह सम्भव ही नहीं है। क्योंकि खुशी, शान्ति और प्रेम आन्तरिक अनुभूति की चीज है जो आत्मिक स्वरुप की अनुभूति से ही केवल मनुष्य को प्राप्त हो सकती है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सबसे कमजोर कड़ी यही है कि विद्यार्थियों को उनके आत्मिक स्वरुप की अनुभूति कराने वाली मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा विलुप्त है। इस बात का अनुभव प्राय: शिक्षाविद् कर रहे हैं और इसके लिए पाठ्यक्रमों में बदलाव लाया जा रहा है। परन्तु समस्या वैसी की वैसी है। यह समय की मांग है कि विद्यार्थियों में सभ्यता, संस्कृति और श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का निर्माण करने के लिए आवश्यक श्रेष्ठ मनोभावों की जागृति के लिए मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा को नैतिक शिक्षा के स्थान पर तुरन्त पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये। अब बहुत देर हो चुकी है परन्तु अब और अधिक देरी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के हित में नहीं है। अन्यथा मानवीय मूल्यों के अभाव में मानवीय सम्बन्धों की समरसता और सामाजिक एकता का ताना-बाना टूटकर छिन्न-भिन्न हो जाएगा। क्या यही शिक्षा की कसौटी है?

यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा नहीं है। इस सत्य के प्रति विभ्रम के कारण ही प्राय: मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति शिक्षाविदों के मन में संकोच रहा है। परन्तु अब इस संकोच का त्याग करने का समय आ गया है अन्यथा मानवीय मूल्यों के अभाव में उत्पन्न होने वाली जीवन की विसंगतियों और भटकाव भरी जिंदगी जीने के लिए त्रस्त हमारी वर्तमान पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। सम्पूर्ण विश्व के मानव समुदाय को मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने वाला प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सम्पूर्ण मानवता के लिए एक प्रकाश स्तम्भ बनकर मूल्यों का प्रकाश फैला रहा है। विश्व के लगभग 137 देशों में फैले हुए 8500 से अधिक सेवाकेन्द्रों (शिक्षाकेन्द्रों) पर सभी धर्म, जाति, रंग, भाषा-भाषी स्त्री-पुरुष आकर मूल्य और आध्यात्मिकता की शिक्षा ग्रहण करके समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने की दिशा में अग्रसर हैं। यहाँ की मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा सम्पूर्ण मानवता के श्रेष्ठ भविष्य का नवनिर्माण करने के लिए आवश्यक ज्ञान का सार तत्व है। यहाँ पढ़ाई जाने वाली मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा मनुष्य को उसके वास्तविक अस्तित्व का बोध कराकर उसमें अन्तर्निहित मानवीय मूल्यों और आन्तरिक शक्तियों के विकास की अनंत सम्भावनाओं का द्वार खोलती है। प्रत्येक बालक असीम जन्मजात शक्तियों को लेकर पैदा होता है। मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा आत्मिक-अनुभूति कराकर मनुष्य का सम्बन्ध उसके आन्तरिक शक्तियों से जोड़कर जीवन को समस्याओं के समाधान और परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने में समर्थ बनाती है। वर्तमान समय में, हमारे विद्यार्थियों को पढ़ाये जा रहे पाठ्यक्रम के साथ मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा की महान आवश्यकता है जिससे वे स्वयं को यथार्थ ढंग से समझकर एक योग्य एवं चरित्रवान नागरिक के रूप में अपना विकास कर सकें।

वास्तविक शिक्षा प्रयोजनवादी होनी चाहिए जो समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और अविष्कारों को पूरा करने में समर्थ हो। यदि शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने तथा यथार्थ मार्गदर्शन करने में विफल रहती है तो वह एक प्रकार से अनचाहे ढोये जाने वाले बोझ के समान होती है। शिक्षा से जीवन को सही दिशा प्राप्त होनी चाहिए। वर्तमान समय में, शैक्षणिक संस्थानों में निरन्तर गिरते जा रहे शैक्षणिक वातावरण और विद्यार्थियों के व्यवहार में तेजी से हो रहे मूल्यों के ह्रास हमारे पाठ्यक्रम में मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट रेखांकित करता है। भारत में उच्च शिक्षा को नियन्त्रित करने वाली यू.जी.सी. ने भी मूल्य शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को अत्यन्त गहराई से महसूस किया है। परन्तु विश्वविद्यालयों और उच्च शैक्षणिक संस्थानों में मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा को लागू करने के पीछे संकोच का जो भाव है, उसे तुरन्त छोड़ना समय की मांग है तभी हम शिक्षा की कसौटी पर खरे उतर सकते हैं। मूल्यनिष्ठ शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करके भारत को विश्वगुरु के सर्वोच्च शिखर पर पुन: प्रतिष्ठित किया जा सकता है। आत्मिक संवाद ही मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा की कसौटी है।

युवाओं में बढ़ते भटकाव की प्रवृत्ति, नशाखोरी, अपराधिक प्रवृत्तियां, भ्रूणहत्या इत्यादि कुप्रवृत्तियां हमारे राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। युवाओं में किसी राष्ट्र को उन्नति के शिखर की ओर ले जाने की अपार सम्भावनाएं होती हैं। परन्तु उनकी सोच को रचनात्मक दिशा प्रदान करना उस राष्ट्र के शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों और शैक्षिक नीति-निर्धारकों का पावन कर्तव्य होता है।

विशेष लेख

डॉ. ब्र.कु. हरीन्द्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

अरबपति बनने का सुनहरा अवसर

धन कमाना हरेक व्यक्ति का सुनहरा सपना और शगल बन गया है। कोई वस्तुओं का उत्पादन और बिक्री करके तो कोई अपने श्रम को बेचकर धन कमाने की दौड़ में लगा हुआ है। प्रवर्तित श्रम द्वारा धन अर्जित करने के पीछे मनुष्य की सोच यही बन गई है कि धन से सुख की प्राप्ति और सुविधाओं का क्रय किया जा सकता है। इसीलिए आज मनुष्य कोई भी कीमत चुकाकर धन अर्जित करने को आतुर है। मनुष्य की इस भौतिकवादी सोच ने शहर को बाजार और मनुष्य को उपभोक्ता बना दिया है। मनुष्य की खुशी, मनोरंजन के साधन और सपने तक भी बिकने लगे हैं। अमीर बनाने के सपनों का व्यापार वर्तमान समय में लागत के दृष्टिकोण से सबसे फायदे का व्यापार बन गया है। यदि आपके पास अमीर बनाने का कोई नुस्खा है तो यकीन करिये आप इसे बेचकर बेशुमार धन कमा सकते हैं। हालांकि सच यही है कि अमीर बनने की चाहत में व्यक्ति लुटता ही जा रहा है। अमीर बनाने का रातों-रात सपना दिखाने वाली फाईनेंस कम्पनियां दिन के उजाले में ही गायब हो जाती हैं और निवेशक बेचारा फाईनेंस कम्पनी के बंद कार्यालय का चक्कर लगाते हुए चक्कर खाने लगता है।

संस्थायें, सरकारें और 5-6 फीट हाड़-माँस की काया में लिपटा हुआ इंसान धन के अर्जन, संग्रह और निवेश में इस सीमा तक लिप्त हो गया है कि वह जीवन के धर्म, कर्म और मर्म को भूल गया है। लगभग 90 के दशक में आर्थिक उदारीकरण का दौर प्रारम्भ होने के बाद तो धन कमाने की मची होड़ के बीच मनुष्य अपने जीवन के यथार्थ उद्देश्य, सामाजिक सारोकार और मानवीय मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से भटक गया है। अब धन की शक्ति धर्म को नियन्त्रित और संचालित करने लगी है। धार्मिक उपासना स्थलों और कार्यक्रमों में साधना, आराधना और भक्ति की शक्ति का प्रभाव कम होकर वैभव और इसके प्रदर्शन का सेंसेक्स निरन्तर ऊपर चढ़ता ही जा रहा है। मनुष्य के सांसारिक जीवन को सफल और सुखी बनाने वाली सरस्वती तो आज लक्ष्मी की तिजोरी में पूरी तरह कैद हो गई है। लक्ष्मी और सरस्वती में श्रेष्ठता के ऐतिहासिक विवाद में जीत की बाजी लक्ष्मी के हाथ लग गई है।

लोगों की दीन, दु:खी और दरिद्रता की अवस्था और व्यवस्था को देखकर विश्व में अपने ढंग के अनोखे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने लोगों के वर्तमान और भविष्य के जीवन को धन से मालामाल कर अरबपति तो क्या पद्मापति बनाने के लिए 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का शुभारम्भ किया है। इस महायोजना के डायरेक्टर ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमपिता परमात्मा शिव का सभी निवेशकों से यह वायदा है कि इसमें किया गया सत्कर्मों का निवेश 100 प्रतिशत सुरक्षित है और लाभांश में अरबपति बनने की पूर्ण गारण्टी है। विश्व में चलने वाली आर्थिक मंदी और प्राकृतिक आपदाओं तथा परिस्थितियों के उथल-पुथल होने के कारण पड़ने वाले दुष्परिणामों से यह योजना पूरी तरह सुरक्षित है। इसलिए सभी मनुष्य चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, उम्र, लिंग, भाषा, आर्थिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि से आते हैं, इस महायोजना में आसानी से निवेश कर सकते हैं। यह 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' एक सीमित अवधि के लिए है। जल्दी कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि आपका पड़ोसी 'आलस्य' और बार-बार धोखा देने वाला 'देह अभिमान चाचा' आपको इस महायोजना के बारे में उल्टी-सुल्टी बातें करके भ्रमित कर दें। आप पूरी तरह इनसे सावधान रहें। क्योंकि यह 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' ब्रह्माकुमारी संस्था का एक अन्तर्राष्ट्रीय उत्पाद है और इसकी गुणवत्ता अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर पूरी तरह प्रमाणित है। इसलिए इसके बारे में 'शकुनी संदेह' का छल-प्रपंच भरा तर्क और कुतर्क इस महाकल्याणकारी संगमयुग पर अरबपति बनने के लिए मिले अंतिम अवसर से आपको सदाकाल के लिए वंचित कर सकता है।

निवेश का अंतिम अवसर

यदि आपको सेवा के अवसरों से वंचित रहने की बार-बार शिकायत है या आप धन के अभाव में सेवा के अवसरों से वंचित हैं अथवा अनपढ़ हैं अथवा वृद्ध हैं तो भी आपके लिए अरबपति बनने का सुनहरा अंतिम अवसर है। इसमें आपको केवल समय और श्रम का निवेश करने में किसी भी प्रकार का शर्म और संकोच नहीं करना है। यदि आप अरबपति बनने का सपना देखा करते हैं तो एक जन्म क्या अनेक जन्म-जन्मान्तर के लिए सपनों को साकार करने का बिल्कुल यही वक्त है। समय का चूका हुआ मनुष्य और डाल का चूका हुआ बंदर सदा पछताता है। इसलिए पश्चाताप के प्रायश्चित से मुक्त होकर 'सात अरब सत्कर्मों की महयोजना' में समय, श्रम, शक्ति और साहस का निवेश तुरंत कीजिए। इसमें निवेश करने के अवसर और विकल्प अत्यन्त आकर्षक हैं। सबसे पहले तो सत्कर्मों की इस योजना में आप स्वयं अपने आपसे निवेश करके अपने पुण्य कर्मों की जमा पूंजी में भारी निवेश कीजिए। इससे आपका आत्मबल, ज्ञानबल और परमात्मबल बढ़ेगा। जीवन में कार्य करने हेतु नई स्फूर्ति एवं आध्यात्मिक चेतना का संचार होगा। तन और मन की यह सक्रियता आपको अकूत धन का मालिक बना देगी।

निवेश के प्रमुख विकल्प

महा अरबपति बनने की इस योजना में अनेक प्रकार की सुरक्षित निवेश के अवसर विकल्प के रूप में उपलब्ध हैं। आप अपने लिए अपनी आन्तरिक मनोभावना के अनुसार किसी भी सत्कर्म के विकल्प का चयन करने के लिए स्वतंत्र हैं। परन्तु दूसरे लोगों से सत्कर्म हेतु निवेश कराने के लिए आपको साक्षीद्रष्टा होकर सत्कर्म करने के विकल्प के चयन करने का आग्रह करना है। हाँ ! यदि फार्म में दिए गए सत्कर्म को समझने में लोगों को कठिनाई का अनुभव हो रहा है तो उन्हें समझाने में सहयोग कर सकते हैं। बेहतर तो यह होगा कि आप पहले ही महा अरबपति बनाने वाली सत्कर्म की इस योजना के लक्ष्य और परिणाम के प्रभाव को लोगों के समक्ष प्रभावशाली तरीके से रखें। सत्कर्मो के निवेश के प्रमुख विकल्प हैं- क्षमा, प्रेम, सहयोग, दया, शान्ति और सद्भावना के प्रकम्पन्न फैलाना, प्रकृति के प्रति दया, खुशी बांटना, विकलांगों की सहायता, महिलाओं की सुरक्षा, स्वयं तथा विश्व के कल्याण के लिए ध्यानाभ्यास, व्यर्थ विचारों को समाप्त करना, दूसरों को प्रेरणा प्रदान करना। इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति सत्कर्म के किसी अन्य विकल्प का चयन करना चाहता है तो उसके लिए भी विकल्प खुले हुए हैं।

प्रमुख उपभोक्ता

सत्कर्म के निवेश का सबसे सुरक्षित उपभोक्ता हम स्वयं ही हैं। सबसे पहले सत्कर्म के लिए ऊपर दिए गए विकल्पों में अपने इच्छानुसार सत्कर्म का चयन सुविधानुसार एक सप्ताह, मास अथवा वर्ष के लिए कर सकते हैं। चयनित किए गए सत्कर्म या सत्कर्मों को देहभान से मुक्त होकर जीवन में व्यावहारिक रूप से अपनाना आवश्यक है तभी आपके महा अरबपति बनने की पूरी गारण्टी है। मान-शान और नाम की सूक्ष्म मनोकामनाएं आपके निवेश के सेंसेक्स में भारी गिरावट लाकर आपको मंदी के दौर में धकेल सकती हैं। इसलिए सुरक्षित निवेश के लिए परोपकारी भावना और आत्मिक दृष्टि, वृत्ति अति आवश्यक है, तभी आपका सत्कर्म के फल का बल 100 गुणा तो क्या पद्मगुणा प्राप्त हो सकता है। क्योंकि सत्कर्मों की पूंजी जमा करने का बैंक पूरे कल्प में केवल एक ही बार वर्तमान संगमयुग पर स्वयं निराकार ज्योर्तिबिन्दुस्वरुप परमात्मा शिव द्वारा स्थापित हुआ है। सत्कर्म के लिए उपभोक्ता के रूप में अन्य विकल्प जैसे परिवार, मित्र, सहकर्मी, समुदाय, शैक्षिक संस्थायें, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, धार्मिक संगठनों, औद्योगिक घराने, धरती माता इत्यादि हैं। सर्वप्रथम संस्थाओं में जाकर इस महायोजना के लक्ष्य और उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रभावशाली प्रेरक सम्बोधन द्वारा लोगों के मन में सत्कर्म के प्रति प्रेरणा उत्पन्न कीजिए। क्योंकि सत्कर्म का व्यापार मन से संचालित होने वाला एक सूक्ष्म व्यापार है। इसलिए खुले मन से सत्कर्म का व्यापार करना आवश्यक है। उपभोक्ताओं के पास जाकर सत्कर्म का कारोबार करने में आपको अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु याद रखिये चुनौतियों को अचल भाव से स्वीकार करके कदम बढ़ाने से ही सफलता की मंजिल पर चढ़ना सम्भव है। आलस्य, उदास, निराश और अहंकारी मन से सत्कर्म का कारोबार करना असम्भव है। राजयोग के अभ्यास द्वारा मन को सशक्त बनाकर सत्कर्म का कारोबार करना सुरक्षित निवेश की विधि है।

सत्कर्म की महायोजना से लाभ

इस संसार के कल्याण, सद्भावना और सहयोग के प्रकम्पन्न द्वारा सुखमय जीवन जीने के लिए समर्पित यह महायोजना भौतिकता की अंधी दौड़ और अज्ञानता के अंधकार में भटक रही मानवता के लिए बेहतर जीवन की संकल्पना को साकार करने का एक अवसर है जिसमें हम और आप मिलकर समाज के सभी लोगों को सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करके स्वर्णिम विश्व के नवनिर्माण की दिशा में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। यह वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित हो चुका है कि जब किसी स्थान में रहने वाली जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग किसी एक विशेष संकल्प में स्थित होकर सामूहिक सोच के साथ कार्य करते हैं

> हमारे द्वारा किये गये छोटे-छोटे सत्कर्म ही हमारे जीवन में खुशियों के स्रोत होते हैं। स्थूल धन, वस्त्र और वस्तुओं को जरूरतमंद लोगों को देना ही वास्तविक सत्कर्म नहीं है। परन्तु स्वयं को इस शरीर द्वारा कर्म करने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा समझकर कर्म करने से हमारे साधारण कर्म भी मानवता के लिए कल्याणकारी और प्रेरक बन जाते हैं। इस प्रकार आप इस अनोखे महाअभियान की नीतियों, कार्यक्रमों तथा क्रियान्वयन में सहभागी बनकर दु:ख से कराह रही मानवता के बोझ को कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

तो उस स्थान का वातावरण बदल जाता है। आप अपने गाँव, शहर, कार्यस्थल इत्यादि स्थानों पर इसी लक्ष्य को लेकर सत्कर्म करने के लिए लोगों को सामूहिक रूप से प्रेरित करके सकारात्मक वातावरण का नवनिर्माण करने के महापुण्य का वर्तमान में चान्स लेकर भविष्य में चान्सलर बन सकते हैं। नकारात्मक वातावरण के कारण सत्कर्म करने से वंचित आत्माओं को सत्कर्म की इस महायोजना से प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। आपका वर्तमान जीवन सुखमय, सुरक्षित और समृद्ध होगा। आपके जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के नये प्रवेश द्वार खुल जाएंगे। आपके प्रति लोगों के मन से सद्भावना और शुभकामना की बेमिशाल पूंजी प्राप्त होगी वह आपके जीवन में आने वाले तूफानों को तोहफे में बदल देगी। आत्माओं को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वरीय ज्ञान और सेवा के अवसर से जोड़ने के लिए निमित्त बनने वाली आप पुण्यात्माओं का अरबपति बनने का सुनहरा सपना साकार हो सकेगा। सत्कर्म द्वारा परमात्म-दुआओं के बैंक में जमा पुण्य कर्म की दुआयें इस जीवन के साथ भी रहेगी और जीवन के बाद भी। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी www.actsofgoodness.org पर उपलब्ध है।

सत्कर्मों से जीवन में श्रेष्ठ फल की प्राप्ति

ब्र.कु. उर्मिला
ज्ञानामृत प्रेस, शान्तिवन

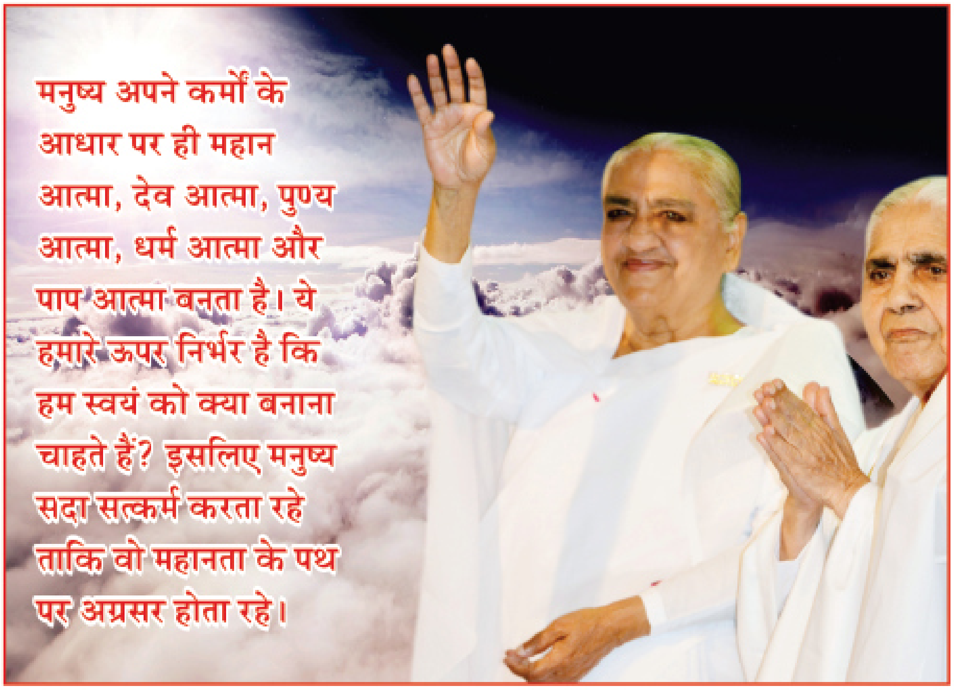

कर्म, मनुष्य के साथ जन्म से जुड़ा हुआ है। संसार में आया हुआ कोई भी मनुष्य कर्म के बिना नहीं रह सकता है। कर्म का आधार है- मनुष्य के भाव, विचार और वृत्तियां। जैसे विचार होंगे, वैसे कर्म होंगे। जैसे भाव होंगे, वैसे कर्म होंगे। सोचना भी कर्म है और बोलना भी कर्म है। शरीर द्वारा कर्म करना भी कर्म है ही।

तो आइये, सत्कर्मों का किस प्रकार श्रेष्ठ फल निकलता है? उसके बारे में कुछ प्रैक्टिकल बातें जानें:

एक बार एक विद्यार्थी घर से स्कूटर लेकर परीक्षा देने जा रहा था। रास्ते में स्कूटर का पेट्रोल समाप्त हो गया। अभी 10 किमी. रास्ता तय करना बाकी था। उसने आते-जाते वाहनों को रोककर थोड़ा पेट्रोल देने की प्रार्थना की, पर किसी ने उसकी मदद नहीं की। परीक्षा में बैठने का समय नजदीक आता जा रहा था, उसकी परेशानी बढ़ रही थी। राज्यस्तरीय इस परीक्षा में उसका भाग्य निर्धारण होना था। इतने में सामने से एक मोटर साइकिल सवार आता दिखाई दिया। इसके मन में कुछ आशा जगी। मोटर साइकिल ठीक इसके सामने आकर रुकी और इसके बोलने से पहले ही पूछ लिया- पेट्रोल खत्म हुआ है क्या? और बिना एक पल गँवाए, अपनी मोटर साइकिल का पेट्रोल इसके स्कूटर में डालकर चला गया। पैसे भी नहीं लिए। इस व्यक्ति को लगा, शायद भगवान का भेजा कोई दूत था। उसे परीक्षा में सफलता मिली और फलस्वरूप ऊँची नौकरी भी। अब यह हर पल उस अनजान व्यक्ति को दुआ देता है कि मैं आज जो कुछ हूँ उसकी बदौलत हूँ। मुसीबत में फँसे, बेबस व्यक्ति की मदद बहुत बड़ी मदद है। हमारा थोड़ा-सा सहयोग हमें जीवन भर के लिए दुआओं का पात्र बना देता है।

जैसे एक छोटा-सा बीज समय आने पर बहुत बड़ा वटवृक्ष बन जाता है। इसी प्रकार एक छोटा-सा सत्कर्म, समय आने पर बहुत बड़े पुण्य में बदल जाता है और उस पुण्य का मीठा फल खाकर हम धन्य हो जाते हैं। एक बार तेज धूप वाली दोपहर में एक छोटा बालक थैले में साबुन की टिक्कियाँ लिए घर-घर जाकर बेच रहा था। एक महिला को उस बच्चे पर दया आई। उसे बुलाकर साबुन खरीदा और फ्रिज से ठण्डे दूध का गिलास निकालकर उसे पीने को दिया। बच्चे ने दूध पी लिया। फिर पूछा- कितने पैसे देने हैं? महिला ने कहा- बेटा, पैसे नहीं देने, मैंने स्नेहवश पिलाया है। बालक धन्यवाद करके आगे चला गया।

इस घटना को बीते कई वर्ष हो चुके थे। महिला काफी बुजुर्ग हो गई थी। उसे हृदयरोग हो गया था और ऑपरेशन के लिए एक हॉस्पिटल में एडमिट हो गई थी। ऑपरेशन ठीक से हो गया। अब बिल की अदायगी करनी थी। लगभग डेढ़ लाख का बिल बना था। महिला के परिवार-जन काफी मुश्किल महसूस कर रहे थे, फिर भी पैसा तो देना ही था। जब डॉक्टर छुट्टी देने आया तो उसे बिल की पेमेन्ट दी जाने लगी, पर उसने बिल के पीछे लिखी- अपनी स्टेटमेन्ट से सबको चौंका दिया। बिल के पीछे लिखा था- 'एक गिलास दूध के बदले में।' महिला ने ध्यान से देखा- यह वही बालक था जो आज इस नर्सिंग होम का संचालक था। एक छोटे से परोपकार का इतना बड़ा फल पाकर महिला गद्गद् हो गई। किसी ने ठीक ही कहा है- किसी ने आप पर छोटा-सा भी उपकार किया हो, उसे मत भूलो और यदि किसी ने आपका बड़ा-सा अपकार किया हो, उसे भी भूल जाओ। हम सत्कर्म कोई फल की आशा से नहीं करते पर सत्कर्मों का शुभ परिणाम बिना चाहे भी हमें अवश्य मिलता है।

जिसको हमसे सुख मिलता है वह हमें भूल नहीं पाता। हम तो नेकी कर दरिया में बहा चुके होते हैं, पर हमारी नेकी से लाभान्वित होने वाले व्यक्ति के दिल पर उसकी छाप लगी रहती है। उसमें भी नेकी करने का उमंग भर जाता है। एक व्यक्ति को सेवा का बहुत शौक था। वह कभी हॉस्पिटल में, कभी गली-मोहल्लों में लोगों की मदद करता फिरता था। उसकी पत्नी उसे बार-बार

घर हमारी प्रथम पाठशाला है और माता-पिता प्रथम शिक्षक होते हैं। इसलिए घर के वातावरण को मूल्यनिष्ठ बनाना आवश्यक है।

सत्कर्मों का खाता भरपूर रखने के लिए निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखें:

- **अहम् का त्याग करें-** अहंकार हमारी सबसे बड़ी समस्या है। इसके कारण हम न झुकना चाहते हैं और न ही दूसरों से कुछ सीखना चाहते है। रावण के पतन का कारण उसका अहंकार था।
- **आलस्य को छोड़ें-** हम आज के काम को कल पर टालते हैं जबकि कल कभी आता नहीं है। संगमयुग अनमोल समय है। पुरुषार्थ करो और आगे बढ़ो। अलबेलेपन को दूर करो और तीव्र पुरुषार्थ करो। अभी नहीं तो कभी नहीं।
- **क्रोध को जीतो-** क्रोध में व्यक्ति सही-गलत, अच्छे-बुरे, अपने-पराये इत्यादि का ध्यान भी भूल जाता है और कुछ का कुछ कर जाता है। रिश्तों में दरार, लड़ाई-झगड़े आदि के मूल में क्रोध ही एक कारण है। शिवबाबा ने मुरली के माध्यम से हमें बताया है कि क्रोध महान शत्रु है। अपने स्वभाव को बहुत मीठा बनाओ और हर परिस्थिति को साक्षीभाव से देखो।
- **शंका और संदेह न रखो-** कहावत है, 'शक का कोई इलाज नहीं है।' हम शक इसलिए करते हैं कि हमें स्वयं पर विश्वास नहीं होता है जिसके चलते हमारा ध्यान स्वयं से हट जाता है और हम दूसरों पर शक करने लगते हैं। इससे बचने का उपाय है, स्वयं की शक्तियों में अनुभव-युक्त विश्वास।
- **बदला न लो-** जो हो गया सो हो गया। जिसने हमारे साथ जैसा किया उसे उसकी करनी पर छोड़ दें। बदले की भावना में ना जीएँ। जो शक्ति हम अपने को बनाने और संवारने में लगा सकते थे उसे हम दूसरों को बर्बाद करने की योजनाओं में लगा देते हैं। बाबा ने हमें इशारा दिया है कि 'बदला न लो, बदलकर दिखाओ।'
- **धैर्यवान बनो-** कहावत है कि सब्र का फल मीठा होता है। भारत में बढ़ते तलाक और आत्महत्या का मुख्य कारण व्यवहार में धैर्य की कमी है। इस कमी के कारण हम कई गलत फैसले ले लेते हैं। अपने उतावलेपन के कारण अन्य व्यक्ति की बातों को नहीं समझ पाते हैं।
- **वर्तमान में जीओ-** हम या तो बीते हुए कल में जीते हैं या आने वाले कल में जबकि जीवन वर्तमान में है। अतीत में सिर्फ यादें हैं और भविष्य में सिर्फ भरोसा है। अगर हम आज पुरुषार्थ करते हैं तो वर्तमान और भविष्य दोनों को संवार सकते हैं। प्यारे बाबा हमेशा कहते हैं, 'बीती को बिन्दी लगाओ।'
- **क्षमा करो-** भूल किसी से भी हो सकती है। अगर इंसान गलती ना करे तो शीघ्र ही देव पद पा ले। गलती को भूलना भी ज़रूरी है। क्षमा का परिणाम कभी बुरा नहीं होता है।
- **स्वयं से प्रेम करो-** जिसे स्वयं से प्रेम नहीं वह और किसी को खुश नहीं रख सकता। असली जीवन वही है जिसमें हम स्वयं शामिल हों। अपनी हर छोटी-बड़ी सफलता पर अपने आपको बधाई दें। बाबा ने हम बच्चों को श्रीमत दी है- बच्चे, स्वमान में रहो। स्वमान अर्थात् स्वयं ही स्वयं को मान देना।

टोकती थी कि ऐसा करने से आपको क्या मिलता है। एक दिन जब वह साइकिल पर जा रहा था तो किसी से टकराकर सड़क पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। एक व्यक्ति ने, जो उसकी सेवा पा चुका था, इस हालत में उसे देख लिया। उसने दूसरे कइयों को इकट्ठा कर लिया। उसे हॉस्पिटल पहुँचाया। उसकी सेवा की, दवा इत्यादि की पेमेन्ट भी कर दी। बाद में उसकी पत्नी को सूचना दी गई। तब तक तो यह व्यक्ति सामान्य हो चुका था। तब इस व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा- आप हमेशा पूछती थी, आपको क्या मिलता है? आज देख लिया ना। आपके आने से पहले तो इन सबने मेरा सब कुछ कर दिया। पत्नी को भी श्रेष्ठ कर्मों के फल की अनुभूति हुई।

प्रकृति के बने इस शरीर में इतनी शक्ति है कि यह अपना काम निपटाकर और भी कइयों की मदद कर सकता है और मन में भी असीम शक्ति भरी है जिसे हम दुआ देने, शुभकामना करने में लगा सकते हैं। कहा गया है- देना ही लेना है। जो देंगे वह लौटकर आएगा। इसलिए दूसरों को सदा अच्छा ही दें ताकि हमें भी जीवन में सदा अच्छा ही मिलता रहे।

कविता

सत्कर्मों से सुखमय संसार...

ब्र.कु. सतीश चन्द्र
आबू पर्वत, राजस्थान

सत्कर्म करो, सत्कर्म करो, समय की यही पुकार है।
सत्कर्मों से सृष्टि पर लाना स्वर्ग बहार है।।
सत्कर्मों के साये में ही वो सुखमय संसार है।
सत्कर्मों की करो कमाई, ये सच्चा व्यापार है।।
हर मज़हब का मक़सद है, सब धर्मों का सार है।
सुख देना और भलाई करना, रखना सद् व्यवहार है।।
क्षमा करो, दया करो, सब पर करना उपकार है।
वो महान है धरती पर, जो सबको करता प्यार है।।
जीवन में सुख-शान्ति का, सत्कर्म ही आधार है।
सत्कर्म की नइया पर बैठा, उसका बेड़ा पार है।।
भूकम्प कहीं तो कहीं सुनामी, कुदरत पे जो अत्याचार है।
सत्कर्म बिना ही दुनिया में, दु;ख-दर्द का हाहाकार है।।
सत्कर्म में मंदिर, मस्जिद है, गिरिजाघर, गुरुद्वार है।
सत्कर्म ही सच्ची पूजा है, सेवा-स्वागत-सत्कार है।।
सत्कर्मों की महायोजना आई आपके द्वार है।
हे आत्मन्! स्वीकार करें, सौभाग्य का ये उपहार है।।

दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

प्रकाश सबको प्रिय लगता है। प्रकाश में कोई भी चीज़ अपने सही रूप में दृष्टिगोचर होती है। अंधकार में ठोकर लगने की, चीज़ का विकृत रूप दिखाई देने की भूल हो सकती है। फिर वह प्रकाश सामूहिक हो, स्थान-स्थान पर हो तो बात कुछ और ही है।

दीपावली भी प्रकाश का पर्व है, पर कदाचित यह भीतर के प्रकाश का प्रतीक है। बाहर के प्रकाश में, बाहरी जगत को तो हम प्रतिदिन ही देखते हैं। क्या 364 दिन इंतजार करने के बाद आने वाला यह महापर्व भी हमें बाहरी जगत का ही दर्शन करायेगा? क्या इसके आगोश में ऐसी कोई कीमती चीज़ नहीं है जो इसे अन्य दिनों से पृथकता प्रदान करे? है, इसके पास एक कल्याणकारी, अलौकिक संदेश है – 'अपने भीतर के दीप को जलाओ; घर-घर में हरेक का आत्म-दीप जलाओ; इस आत्म-ज्ञान की रोशनी में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य की अमावस्या को जला दो; शुद्ध स्नेह, शान्ति, संतोष, आत्मिक भाव और नम्रता की पूर्णमासी अर्थात् पूर्णता के युग का आह्वान करो।'

दीपावली आ रही है। यह अकेली नहीं आती, अपने साथ पर्वों का समूह लेकर आती है। दीपावली से पहले दो पर्व और बाद में दो पर्व। बीच में है दीपावली, आत्म-दीप के पूर्णरूपेण जगमग होने की प्रतीक। प्रथम दो पर्व उस विधि का उल्लेख करते हैं जिससे आत्म-दीप जग उठता है और बाद के दो पर्व उस सुखद परिणाम का वर्णन करते हैं जो आत्म-दीप जग उठने के बाद सामने आता है।

ईश्वरीय कर्तव्य की यादगार

जैसे किसी नाटक की सर्वप्रमुख घटना वह होती है जब उसका नायक उलझनों को सुलझन में, समस्या को समाधान में और कारणों को निवारण में बदल रहा होता है। उसी प्रकार सृष्टि रूपी महानाटक की सर्वप्रमुख घटना वही है जब इसके महानायक परमपिता परमात्मा सृष्टि पर अवतरित होकर पाप का नाश कर, पुण्य के युग की स्थापना करते हैं। इसलिए जितनी भी यादगारें, मन्दिर, शास्त्र, त्योहार, व्रत आदि बने हैं, वे भिन्न-भिन्न रूपों से इसी ईश्वरीय कर्तव्य का प्रदर्शन और वर्णन करते हैं। दीपावली भी ईश्वरीय कर्तव्य की यादगार है। जब चारों ओर हिंसा, कामाचार, अपराध, व्यसन, कर्तव्यहीनता, गंदगी, स्वार्थ, धोखा, बेईमानी, बेइंसाफी, मैं-मेरा, अहंकार, भ्रष्टाचार आदि का अंधकार छा गया तो भगवान ने ज्ञान-दीप से उसे भगा डाला, इसलिए ईश्वरीय ज्ञान की महिमा के निमित्त है यह पर्व।

धन-तेरस

दीपावली से दो दिन पूर्व धन-तेरस नाम से त्योहार मनाया जाता है। इसका संबंध अन्न और स्वास्थ्य से है। वैद्य धनवन्तरि का जन्मदिन इस दिन मनाया जाता है और नई खरीफ की फसल की खीलें तैयार कर, नए बर्तनों में डालकर भगवान को भोग लगाकर बाद में स्वयं उपयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य बहुत बड़ा धन है। कहा जाता है- पहला सुख निरोगी काया। काया के निरोग होने पर ही धन या जन का सुख मिल सकता है। आध्यात्मिक साधना के लिए, आत्मा का दीप जलाने के लिए भी काया निरोगी चाहिए। काया को स्वस्थ बनाने के लिए मन और अन्न दोनों सात्विक चाहिए। हम केवल एक धन-तेरस के दिन नए बर्तनों में, नया अनाज भगवान को भोग लगाते हैं लेकिन एक दिन के भोग से तो आत्मा का दीप नहीं जल सकेगा। आत्म-दीप तो तब जले जब प्रतिदिन, पवित्र बर्तन में, सात्विक पदार्थों से बने भोजन का कुछ अंश डालकर, प्रकाश पुंज परमात्मा को भोग लगाया जाये और फिर उस प्रसाद रूप भोजन को परमात्मा की याद में ही स्वीकार किया जाये। भगवान जब प्रकाश की दुनिया अर्थात् सतयुग का निर्माण करने धरती पर आते हैं तो मानवात्माओं को शुद्ध-सात्विक प्रसाद रूप भोजन खिला-खिलाकर उनके बुझे दीप को ज्ञान-घृत से प्रज्ज्वलित कर देते हैं। उसी की यादगार है यह धनतेरस का पर्व।

नरक चतुर्दशी

धन-तेरस से अगले दिन नरक चतुर्दशी मनाई जाती है। पौराणिक कथा है कि नरकासुर नाम के दैत्य ने 16 हज़ार कन्याओं को बंदी बना लिया था। भगवान ने दैत्य को मारकर उन 16 हज़ार कन्याओं को मुक्त कराया, इसकी याद में मनाया जाता है यह पर्व। यह कथा भी ईश्वरीय कर्तव्य की यादगार है। नरकासुर अर्थात् संसार को नरक बना देने वाला असुर। देह का अभिमान ही नरकासुर है। काम, क्रोध... ये विकार ही इसकी सेना हैं। 16 हज़ार कन्यायें उन पवित्र आत्माओं की प्रतीक हैं जो भगवान के गले में माला के रूप में पिरोये जाने योग्य हैं परन्तु अज्ञान के कारण देह-अभिमान के चंगुल में फँस जाती हैं। उन प्रभु-प्रेमी आत्माओं की करुण पुकार सुन

भगवान धरती पर अवतरित होते हैं, ज्ञान-दीप जलाकर देह-अभिमान रूपी दैत्य का नाश करते हैं और काम, क्रोध आदि विकारों के बंदीगृह से आत्मा को मुक्त करते हैं।

दीपावली

नरक चतुर्दशी के बाद दीपावली मनाई जाती है। जब देह अभिमान रूपी दैत्य का नाश हो जाता है तो सृष्टि पर देवों का युग आ जाता है। अत: दीपावली है सर्व जगे हुए दीपकों का त्योहार अर्थात् सतयुग का यादगार जहाँ हर देवी-देवता आत्म-स्थित है।

दीपक मिट्टी का बना होता है। 25 या 50 पैसे भर उसकी कीमत होती है परन्तु जब उसमें तेल और बाती डल जाती है और जल उठता है तो पूज्यनीय बन जाता है। उसको नमस्कार किया जाता है, उसकी रोशनी को सिर-माथे से लगाया जाता है। उस प्रज्ज्वलित दीपक पर धन तथा पदार्थ वारी किये जाते हैं, उसे साक्षी मान प्रण किये जाते हैं लेकिन तेल चुकते ही, बाती बुझते ही दीपक को कचरे में फेंक दिया जाता है। मानव शरीर भी मिट्टी के दीपक सदृश्य ही है, जब इसमें आत्मा रूपी ज्योति प्रवेश हो जाती और ज्ञान रूपी घी से वह ज्योति निरंतर जगमगाती रहती है तो व्यक्ति पूज्यनीय बन जाता है। परन्तु, आत्मा के जाते ही, शरीर की गति मिट्टी के दीपक समान ही हो जाती है। अत: दीपावली है आत्मा की ज्योति ज्ञान-घृत से प्रकाशित कर जीवन को पूज्यनीय बनाने का यादगार। अमावस्या कलियुग का प्रतीक है और प्रकाशित रात्रि सतयुग का प्रतीक है। श्री लक्ष्मी जी का पूजन वास्तव में श्री लक्ष्मी समान श्रेष्ठ लक्षणों को धारण कर देव-पद प्राप्त करने की यादगार है। पूजा के दीपकों में बड़ा दीपक दीपराज परमात्मा शिव की यादगार है, जिसकी ज्योति से अन्य आत्मा रूपी दीपक भी जगमग हो उठते हैं। नये वस्त्र, नये सतयुगी संस्कारों को धारण करने के प्रतीक तथा नये बही खाते, कलियुगी कर्मबन्धन और पाप-खाते को खत्म कर, सतयुगी सुख के संबंध में जाने के प्रतीक हैं।

इस दिन किया जाने वाला दीप-दान, ज्ञान के द्वारा दूसरों को ईश्वरीय मार्ग दिखाने का प्रतीक है। चीनी के बने मीठे हाथी-घोड़े सतयुगी समृद्धि और अखुट खज़ाने, धन-दौलत के प्रतीक हैं। आतिशबाजी, पुरानी कलियुगी आसुरी प्रवृत्तियों के नाश के लिए चलने वाले घातक बमों की प्रतीक है। अंतर्मन की विकारों रूपी कालिमा, ईर्ष्या-द्वेष रूपी मक्खी-मच्छर, इच्छाओं-तृष्णाओं रूपी जाले, हिंसा-कपट रूपी कूड़ा-कर्कट समाप्त करके ही हम सतयुगी स्वच्छ दुनिया का राज-भाग पा सकते हैं इसलिए दीपावली पर घर का कोना-कोना स्वच्छ किया जाता है। ऐसे स्वच्छ मन वाले लोगों के निवास पर ही पवित्रता की देवी श्री लक्ष्मी का शुभागमन हो सकता है अर्थात् सृष्टि के स्वच्छ होने पर ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण सिंहासनारूढ़ होते हैं। स्वस्तिक का चिह्न, सृष्टि ड्रामा के पाँचों युगों के ज्ञान का प्रतीक है।

गोवर्धन पूजा

दीपावली से अगले दिन गोवर्धन पूजा होती है। गोवर्धन अर्थात् गउओं का वर्धन। गउएँ समृद्धि की प्रतीक हैं। गउओं से समृद्ध, भारत के आदिकाल में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं। ऐसा भारत पुन: बनाने के लिए भगवान को चाहिए एक अंगुली का सहयोग। भगवान स्वयं भी गोवर्धन पर्वत उठाने रूपी सृष्टि-परिवर्तन के महाकार्य को कर सकते हैं, पर अपने बच्चों का भाग्य बनवाने के लिए उनकी उंगली अवश्य लगवाते हैं। उंगली के तीन पोर- तन, मन, धन की शक्ति के प्रतीक हैं। जब हम सब मिलकर ईश्वरीय कार्य में तन, मन, धन से सहयोग देते हैं तो कलियुगी पहाड़ उठ जाता है और हरा-भरा सतयुगी साम्राज्य स्थापित हो जाता है।

भाई-दूज

गोवर्धन पूजा से अगले दिन आती है यम द्वितीया या भाई-दूज। यादगार में दिखाते हैं कि यम और यमुना दोनों भाई-बहन थे। यम, धर्मराज के पद पर सुशोभित हुए। बहन हर वर्ष उन्हें टीका लगाती, मुख मीठा कराती और उनकी दीर्घायु की कामना करती। इसके बदले यम ने वरदान दिया कि इस दिन जो भी बहन अपने भाई को टीका लगाएगी, उसे यम का भय नहीं रहेगा। इस कथा के भी आध्यात्मिक अर्थ हैं। प्रथम तो यह है कि भगवान जब धरती पर आते हैं तो वे मनुष्यात्मा को सर्व संबंधों का सुख प्रदान करते हैं। आत्मायें उनके साथ भाई और बन्धु का भी नाता जोड़ती हैं और बदले में सतयुग-त्रेतायुग के 21 जन्मों तक अकाल-मृत्यु के भय से मुक्त होने का वरदान प्राप्त करती हैं। दूसरा अर्थ यह है कि भगवान जब धरती पर आते हैं तो मानवात्माओं के बीच, ज्ञान बल से भाई-बहन का पवित्र स्नेह प्रवाहित कर देते हैं जिस कारण सतयुगी सृष्टि में मानव-मानव के बीच तो प्रेम रहता ही है, शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते हैं। प्रकृति भी मानव को सुख देती है। ऐसी स्नेह भरी दुनिया, जहाँ अकाल-मृत्यु प्रवेश नहीं कर सकती, के स्थापित होने का प्रतीक है यह भाई-दूज का पर्व

आइये, प्रण करें, इस पर्व-समूह में जिन मानवीय, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों का सन्देश समाया है, उन्हें हम प्रतिदिन ही जीवन में धारण करेंगे और हर दिन को ही प्रकाश-पर्व बना देंगे।

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

काठमाण्डू (नेपाल)

गोधरा (गुज.)

कांगड़ा (हि.प्र.)

राजकोट (गुज.)

शान्तिवन (राज.)

बेहल (हरियाणा)

धमतरी (छ.ग.)

पाटन (गुज.)

खुश रहकर खुशी बांटना सबसे बड़ा निवेश है।

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

हरी नगर (दिल्ली)

कड़पा (आंध्रप्रदेश)

कोटा (राज.)

जयपुर (राज.)

चेन्नई (तमिलनाडु)

शान्तिवन (राज.)

अहमदावाद (गुज.)

भाईंदर (महाराष्ट्र)

'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का दीप प्रज्ज्वलित कर वैश्विक शुभारम्भ करते हुए उर्वरक एवं रासायनिक मंत्री अनंत कुमार, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा अन्य।

'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का भव्य शुभारम्भ

शान्तिवन (आबू रोड)। **'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना'** प्रोजेक्ट का वैश्विक शुभारम्भ करने के लिए पधारे उर्वरक एवं रासायनिक मंत्री **अनंत कुमार** ने कहा कि 25 अगस्त 'विश्व बन्धुत्व दिवस' के दिन दादी प्रकाशमणि जी की कल्पनाओं को साकार रूप देने के लिए आप सभी ने इस प्रोजेक्ट का शुभारम्भ करके एक अद्‌भुत सम्मान प्रदान किया है। हम सबके लिए आज एक चुनौती है कि हम व्यक्तिगत रूप से इस महायोजना में कितना योगदान दे पाते हैं। यदि इस प्रोजेक्ट से पूरे विश्व को प्रत्येक दिन शुभ-भावनाएं पहुंचती हैं तो इससे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं हो सकता।

उन्होंने आगे कहा कि मैं यहाँ एक मंत्री, एक सांसद अथवा एक राजनेता के सम्बन्ध से नहीं बल्कि एक ब्रह्माकुमार के नाते से उपस्थित हुआ हूँ। इस संस्थान को किसी पुरुष या महिला शक्ति नहीं बल्कि एक पराशक्ति या दिव्य शक्ति चला रही है। यहाँ मैंने देखा कि इतना बड़ा संगठन होने के बावजूद भी सभी प्रेम, शान्ति एवं एकाग्रचित्त होकर बैठे हैं। यह परमपिता परमात्मा की ही शक्ति है। आज से मैं भी सद्‌मार्ग पर चलने की कोशिश करूंगा। 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' नामक स्लोगन को ब्रह्माकुमारीज ही साकार रूप देगी।

संस्था की संयुक्त मुख्य संचालिका **दादी रतनमोहिनी** ने सत्कर्मों द्वारा इस योजना को सफल बनाने के लिए सभी को प्रेरित किया। आपने कहा कि यह प्रोजेक्ट पूरे विश्व को स्वर्ग बनाने के निमित्त बनेगा। अब यह कार्य थोड़े समय में ही पूरी दुनिया को दिखाई देगा। उन्होंने अपने आशीर्वचनों के साथ इस प्रोजेक्ट को शुभभावनाएं दीं।

संस्था के कार्यकारी सचिव **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि आज दादी प्रकाशमणि जी की पुण्य स्मृति दिवस है। इस महान अवसर पर 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का वैश्विक शुभारम्भ हो रहा है। यह हम सभी के लिए गौरव की बात है। इस महायोजना से पूरे विश्व में वैचारिक क्रान्ति आयेगी और यह संसार सुख, शान्ति एवं पवित्रता से परिपूर्ण हो जाएगा। यही इस प्रोजेक्ट का लक्ष्य है। इस अवसर पर संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित देश-विदेश से आये 25 हजार भाई बहनें उपस्थित थे।

25 अगस्त, 2014 का दिन ब्रह्माकुमारी संस्थान के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया जब 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का वैश्विक शुभारम्भ हुआ। यह प्रोजेक्ट भारत सहित पूरे विश्व के कई देशों में एक वर्ष तक चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में सत्कर्मों की लहर फैलाकर लोगों में प्रेम, एकता और भाईचारे की भावना जागृत करना है जिससे उनका जीवन सुख, शान्ति, आनंद और पवित्रता जैसे गुणों से परिपूर्ण हो सके और वे विकारों, बुराइयों जैसे अवगुणों से मुक्त होकर अपना जीवन श्रेष्ठ बना सके। इस प्रोजेक्ट के मुख्य संचालक **ब्र.कु. राम प्रकाश**, न्यूयार्क है।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय

के तकनीकी सहयोग से संचालित पाठ्यक्रम

ब्रह्माकुमारीज़, शिक्षा प्रभाग (R.E. & R.F.)

मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म

Self Management & Crisis Management

डिप्लोमा	स्नातकोत्तर डिप्लोमा	एम.एससी	एम.बी.ए.
हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / गुजराती	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / मराठी / गुजराती / नेपाली	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / गुजराती / नेपाली	अंग्रेजी
+ 2 अथवा समकक्ष	विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री या समकक्ष	विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री या समकक्ष	विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री या समकक्ष
एक वर्ष	एक वर्ष	दो वर्ष	दो वर्ष
2500 /- रू.	4500 /- रू.	प्रथम वर्ष - 4500 /- रू. द्वितीय वर्ष - 7000 /- रू.	प्रथम वर्ष - 14500 /- रू. द्वितीय वर्ष - 14000 /- रू.

एम.एससी (Lateral entry-one year) पी.जी. डिप्लोमा (VE & S) प्राप्त कर चुके विद्यार्थियों के लिए

पाठ्यक्रम नियमावली और आवेदन फार्म ब्रह्माकुमारीज़ के किसी भी पी.सी.पी. केन्द्र से प्राप्त किये जा सकते हैं अथवा कार्यक्रम के निदेशक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं। (अ) 100 रू. हाथों हाथ (ब) पोस्ट के द्वारा 150 रू. का डिमाण्ड ड्राफ्ट, एम.बी.ए. के लिए 250 रू. हाथों हाथ (ब) पोस्ट के द्वारा 290 रू. का डिमाण्ड ड्राफ्ट, निदेशक अन्नामलाई विश्वविद्यालय के पक्ष में बनाया गया तथा चेन्नई शाखा में देय होना चाहिए। परीक्षा- वार्षिक परीक्षा प्रत्येक वर्ष 19 मई से प्रारम्भ होगी।

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, आबू पर्वत

डॉ. ब्र.कु. पांडियमणि
निर्देशक, मूल्य शिक्षा कार्यक्रम, आबू पर्वत
मो.नं.: 094141-53090, 094422-22157

AU Nodal Office

ब्रह्माकुमारीज़, विश्व शान्ति भवन
36, मिनाक्षी नगर, पी. एण्ड टी. नगर के पीछे
मदुराई (तमिलनाडु)-625017, फैक्स: 0452-2640666
मो.नं.: 094422-68660 / 94141-52522
E-mail: bkeducationwing@gmail.com
Website: www.bkvalueeducation.in

शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य ज्ञान पर आधारित जीवन का विकास करना ही नहीं है बल्कि मूल्य आधारित शिक्षा और आध्यात्मिकता का विकास भी है। छात्रों की प्रवृत्तियों तथा व्यवहार में मानवीय दृष्टिकोण का आयाम विकसित कर व्यक्तित्व का दिव्यीकरण करने में सहायक है।

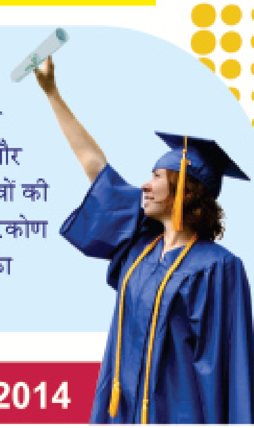

ADMISSION OPEN : प्रवेश की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2014

1. चेन्नई (तमिलनाडु)। शिक्षाविदों के लिए आयोजित 'आर्ट ऑफ कोचिंग एण्ड रिलेशनशिप विद् स्टूडेंट्स' विषय पर अपना विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. मुथुमनी। साथ है उच्च शिक्षा मंत्री थिरू पी. पालानिअप्पन, ब्र.कु. बीना, ब्र.कु. पांडियमणि तथा अन्य। **2. बैंगलोर (कर्नाटक)।** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का लॉंचिंग करते हुए मेण्ट्रो रेलवे के डीजीएम रगुरमन, फिल्म अभिनेत्री लक्ष्मी गोपाल स्वामी, ब्र.कु. मृत्युंजय तथा ब्र.कु. अम्बिका। **3. अम्बाला (पंजाब)।** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का लॉंचिंग करते हुए ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. कृष्णा तथा अन्य। **4. कोटकापुरा (पंजाब)।** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में मंचासीन है ब्र.कु. रामप्रकाश, संत सुखबीर महाराज, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. संध्या तथा अन्य। **5. पानीपत (हरियाणा)।** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. भारत भूषण तथा अन्य। **6. नडियाद (गुजरात)।** प्रोजेक्ट में अपना आशीर्वचन देते हुए ब्र.कु. संध्या। साथ है ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. पूर्णिमा, एस.के. लांगा तथा अन्य।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org
Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla31@gmail.com

To,